गन्ना कृषक माह अक्टूबर में क्या करें!

1– जिन कृषकों का खेत खाली हो तथा उसमें पर्याप्त नमी भी हो, उसे शीघ्र तैयार कर शरद्कालीन गन्ने की बुवाई करें। खेत की तैयारी के समय यदि उपलब्ध हो तो जैविक खाद, गोबर की कम्पोस्ट खाद या सड़ी हुई प्रेसमड का प्रयोग अवश्य करें।

2– शरद्कालीन बुवाई में प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पकने वाली प्रजातियॉ को0शा0 8436, 88230, 96268, को0से0 98231, 01235, 03234, को0शा0 08272, यू0पी0 05125 की बुवाई करें ताकि चीनी मिलों में पेराई शीघ्र प्रारम्भ करना सम्भव हो सके। सामान्य प्रजातियों में को0शा0 8432, को0से0 95422, को0शा0 96275, 97261, 96269, 99259, 98259, यू0पी0 0097, को0शा0 97264, 07250, को0से0 01424, 01434 की बुवाई को प्राथमिकता दें (उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुत प्रजातियों की सूची तालिका–1 में दी गई है)।

4– शरद्कालीन गन्ने की बुवाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 90 से0मी0 एवं कूँड़ों की गहराई 6–8 से0मी0 ही रखें। गन्ने की दो पंक्तियों के मध्य उपलब्ध संसाधनों के अनुसार आलू (एक–दो पंक्ति), लहसुन (4 पंक्ति), मटर फली (2 पंक्ति), लाही (दो पंक्ति), सौंफ, धनियॉ, मसूर, शरद्कालीन सब्जियॉ अन्तः फसल के रूप में बोकर दोहरा लाभ कमायें। आलू, लहसुन तथा मटर की फली की अन्तः खेती करने से गन्ने की उपज में 8–10 प्रतिशत की वृद्धि होती है।

5– संशोधित ट्रेन्च विधि से गन्ना बुवाई करके गन्ना व चीनी के उत्पादन में सार्थक वृद्धि की जा सकती है। लगभग 120 से0मी0 की दूरी पर 30 से0मी0 चौड़ी कूँड़ बनाकर दो ऑख के पैड़ों से बुवाई करें। नमी कम होने की दशा में 2 से0मी0 मिट्टी से ढकाई कर तुरन्त सिंचाई करें परन्तु पर्याप्त नमी की दशा में 1–2 इंच मिट्टी से ढकाई करके एक सप्ताह बाद हल्की सिंचाई करें।

6– जिन क्षेत्रों में वर्षाकाल में पर्याप्त वर्षा न हुई हो वहॉ खड़ी फसल में सिंचाई करने से उत्पादकता में वृद्धि होती है।

दो ऑख के टुकड़े बोना । तभी खेत में उपजे सोना ।।